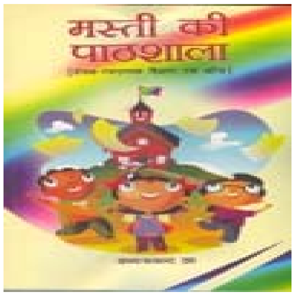

मस्ती की पाठशाला (रोचक-रचनात्मक शिक्षण :एक खोज)

आईएसबीएन : 978-81-230-1621-4

लेखक : कमलानन्द झा

मूल्य : 95/-

शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यपुस्तक के बीच का रिश्ता ही शिक्षण की दिशा तय करता है। इनमें भी पाठ्यपुस्तकों से अधिक कक्षा में शिक्षक की भूमिका प्रधान होती है जबकि केंद्र में विद्यार्थी होना चाहिए। विद्यालयों को सुख-सुविधा संपन्न बनाने से अधिक एक ऐसी जगह बनानी चाहिए जहां बच्चे अपने बुद्धि कौशल को व्यावहारिक जामा पहनाने की आदत डाल सकें। इसके लिए पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु को विद्यार्थी के और समीप लाना होगा और शिक्षण के नए मगर व्यावहारिक तरीके ईजाद करने होंगे। इस पुस्तक में पुराने, घिसे-पिटे तथा नए और कारगर तरीकों पर बेवाक और तीखा विश्लेषण किया गया है।

लेखक एन.बी.टी. के लिए पुस्तक संपादित कर चुके हैं और बाल शिक्षण मनोविज्ञान के जानकार हैं।